International Research Journal of Humanities, Language and Literature ISSN: (2394-1642)

Impact Factor 5.401 Volume 4, Issue 6, June 2017

Website-www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

कालिदास का सौन्दर्यावबोध

डॉ. निहाल सिंह

सहायक आचार्य, संस्कृत

महारानी श्री जया राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,

भरतपुर (राज.)

Email Id – nihal.imalia@gmail.com

शोधसार - **उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्।**

दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः।।

संस्कृत के कवि शिरोमणि कविकुलगुरु एवं उपमा प्रयोग के लिए ख्यात मूर्धन्य महाकवि कालिदास प्रारम्भ से ही अनामिकाधिष्ठित ही रहे हैं। महाकवि अपनी विश्वप्रसिद्ध कृतियों में आद्योपान्त प्रभावशाली बने रहते हैं। कृतित्व में यूं तो महाकवि द्वारा अधिकांश विषयों को प्रतिपाद्य बनाकर विशिष्ट वर्णन किया गया है। जिनमें प्रकृति-चित्रण, चरित्र-चित्रण, स्थानों से परिचय, नारीचित्रण इत्यादि इनके काव्य में आसानी से देखे जा सकते हैं।

प्रस्तुत शोधपत्र में महाकवि द्वारा प्रस्तुत एवं व्याख्यायित सौन्दर्य-अवबोध को प्रतिपाद्य के रूप में रखा गया है। काव्यसप्तक के सन्दर्भ में वर्णित सौन्दर्य-अवबोध का सोद्धरण परिशीलन प्रस्तुत है। विशेषतः अभिज्ञानशाकुन्तलम्, मेघदूतम्, कुमारसम्भवम् आदि ग्रन्थों के आलोक में तैयार शोधपत्र विद्वत्समाज को रसास्वादनार्थ प्रस्तुत है।

संकेतशब्द/कूटशब्द - कालिदासीय नारी, सौन्दर्य, कालिदासीय सौन्दर्यावबोध, उपमा कालिदासस्य, मेघदूतम् में सौन्दर्य-अवबोध, अभिज्ञानशाकुन्तलम् महाकाव्य में नायिका

© **Associated Asia Research Foundation (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

की अगाध सुन्दरता, भारतीय संस्कृति में नारीपूजा, रघुवंशम् महाकाव्य में नदी, रघुवंशम् में वर्णित इन्दुमती स्वयंवर, दीपशिखा कालिदास, कालिदास का सौन्दर्यावबोध।

.....

"सौन्दर्य एक पूजा है और मानव उसका पुजारी"

सौन्दर्य मानव को स्वभाव से ही प्रिय है। खुदाई से प्राप्त प्राचीन सामग्री को देखने से भी इस तथ्य की पुष्टि होती है कि प्राचीन काल का मानव भी सुन्दर एवं असुन्दर में भेद करके सुन्दर की तरफ ही आकृष्ट होता था। इसी मानवीय स्वभाव का प्रतिबिम्ब कालिदास के काव्य-सौन्दर्य में भी प्रतिबिम्बित होता है। प्रश्न यह है कि आखिर सौन्दर्य है क्या ?

यद्यपि चिर विस्मृत काल से अनेक कलाकार अपनी कृतियों में सौन्दर्य का निरूपण करते चले आ रहे हैं, किन्तु सौन्दर्य है क्या? इसका लक्षण करने की मानो उन्हें कभी आवश्यकता ही नहीं पड़ी। कुछ का तो यह मानना है कि उसका लक्षण उसी प्रकार असम्भव है, जिस प्रकार मृग द्वारा झाड़ियों में कस्तूरी की खोज। क्योंकि वे उसे विषयगत नहीं अपितु विषयीगत मानते हुए कहते हैं कि-

समै समै सुन्दर सबै, रूप कुरूप न कोय।

मन की रुचि जेती इतै, तित तेती रुचि होय।।[1]

संस्कृत के एक कवि भी इसी तथ्य का समर्थन करते हुए लिखते हैं कि "दही मीठा है, शहद मीठा है, अंगूर मीठा है, और मिशरी तो मीठी है ही, जिसका मन जिससे लगे, उसके लिए वही मीठा है। यथा-

दधि मधुरं मधु मधुरं द्राक्षा मधुरा सिताऽपि मधुरैव।

तस्य तदैव हि मधुरं यस्य मनो यत्र संलग्नम् ।।

नैषधीयचरित में श्रीहर्ष लिखते हैं कि सौन्दर्य से ओतप्रोत होता हुआ भी युवती का रूप एक अवयस्क बालक को उतना आकृष्ट नहीं करता, जितना एक यौवनोद्धत युवक को।

यथा यूनस्तद्वत्पररमणीया हि रमणी।

कुमाराणामन्तरूकरणहरणं नैव कुरुते।।२

किन्तु ऐसे सहृदयों का भी अभाव नहीं है, जो सौन्दर्य को विषयगत स्वीकार करते हैं। महाकवि माघ की वह उक्ति इसी बात का समर्थन करती है, जिसमें उन्होंने कहा है कि "वास्तविक सौन्दर्य तो वही है, जो प्रतिक्षण नया ही नया लगता है।" यथा- **"क्षणे क्षणे**

यन्नवतामुपैति तदेव रूपं रमणीयतायाः।"[3] महाकवि पद्माकर ने भी इसी बात का समर्थन करते हुए कहा हैं कि -

पल-पल में पलटन लगे, जाके अंग अनूप ।

ऐसी इक ब्रजबाल को, कहि नहीं सकत सरूप।।

वास्तविक रूप में सफल सौन्दर्य वही है जो प्रति पल अपने आप को नवीन रूप-स्वरूप में प्रदर्शित करे। अनेक सहृदय सामाजिकों ने सौन्दर्य को विषयगत स्वीकार किया है। उर्दू भाषा के कवि अकबर ने भी इसकी पुष्टि यह उक्ति देकर की है कि "तुम्हारा सौन्दर्य प्रतिपल बदलता रहता है। यदि इसमें किसी को सन्देह हो तो वह तुम्हारी तस्वीर को साथ रखकर तुम्हें देखे।"

लहजा लहजा है तरक्की पर तेरा हुस्नो जमाल ।

जिसको शक हो तुझे देखे, तेरी तस्वीर के साथ।।

कुछ विचारक सौन्दर्य को उभयगत स्वीकार करते हैं एवं वस्तु-गुण तथा देखने वाले का गुण स्वीकार करते हुए कहते हैं कि "रूप रिझावनहार यह, वे नयना हैं रिझवार।" अर्थात् तुम्हारा सौन्दर्य तो रिझाने वाला है ही, पर उस प्रेमी की आँखें भी कोई कम नहीं, जो रूप पर रीझना जानती हैं।" रूप को समझने के लिए भी सरागा दृष्टि की आवश्यकता होती है, जो केवल सरस हृदय तथा सुसंस्कृत मन से ही प्राप्त हो सकती है। तभी तो "अभिज्ञान शाकुन्तलम्" नाटक में सानुमती ने विदूषक के लिए कहा था कि -

"अनभिज्ञः खल्वीदृशस्य रूपस्य मोघदृष्टिरयं जनः।"[4]

अर्थात् यह मूर्ख शकुन्तला के सौन्दर्य को भला क्या समझेगा क्योंकि यहाँ तो इसकी दृष्टि ही बेकार है। प्राचीन ग्रीक निवासी अत्यन्त सौन्दर्यप्रिय थे, जिनकी साक्षी उनकी बनायी गयी मूर्तियाँ है। अंगों की बनावट, मापतौल, सुडौल संघटना तथा गठन पर वे बहुत बल देते थे। आज भी सभ्य संसार में शरीर के विभिन्न अंगों, यथा-वक्षस्थल, कमर, नितम्ब प्रदेश आदि की उपयुक्त बनावट एवं सुडौलता आदि को ही सौन्दर्य प्रतियोगिताओं में प्रधानता दी जाती है। संस्कृत साहित्य में इसी का नाम रेखा है, यथा-

शिरोनेत्रकरादीनामङ्गानां मेलने सति ।

अङ्गश्रीः कथ्यते रेखा चक्षुः पीयूषवर्षिणी।।[5]

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने भी कुछ हद तक रूप-रंग को ही सौन्दर्य का आधार मानते हुए कहा है कि कुछ रूप-रंग की वस्तुएँ ऐसी होती हैं, जो हमारे मन में प्रवेश करते ही थोड़ी देर के लिए हमारी सत्ता पर ऐसा अधिकार कर लेती हैं कि "हमारी सत्ता ही हवा हो जाती है,

और हम उन वस्तुओं की भावना के रूप में परिणत हो जाते हैं।" आचार्य आनन्दवर्धन ध्वनि पर विचार करते हुए यथाप्रसंग कहते हैं कि महाकवियों की वाणी में ध्वनि इस प्रकार सुशोभित होती है, जिस प्रकार युवति के अंग, उनकी गठनात्मकता या रूप-रंग आदि से सर्वथा भिन्न होते हुए भी उसका 'लावण्य' ऐसा झलकता है, जैसे - मोती में आभा।

अधिकतर कवि, लेखक एवं सहृदय सामाजिक प्रकृति की रङ्गशाला में सुन्दर अंगों के प्रसिद्ध उपमान चन्द्र, कमल, मोती, शिरीष पुष्प आदि की सहायता से ही अपने सौन्दर्य चित्रों का निर्माण करते चले आ रहे हैं। उपमा के धनी महाकवि कालिदास भी इसी कोटि के अन्तर्गत आते हैं। उत्तरमेघ में उनके द्वारा किया गया यक्षपत्नी का वर्णन इसी का संकेत है, जिसमें यक्ष मेघ से कहता है कि हे मित्र! वहाँ अलकापुरी वाले मेरे घर में तुम्हारी दृष्टि एक ऐसी दुबली-पतली श्यामा युवती पर पड़ेगी, जो जवानी से सराबोर होगी, उसकी दन्त-पंक्ति कमल की पंखुड़ियों के समान श्वेत एवं नुकीली होगी, गहरी नाभि वाली, डरी हुई मृगी के समान चंचल नेत्रों से निहारती हुई, स्तनों के भार से अनवरत, और जघन प्रदेश के भारी होने से जब वह धीरे-धीरे चलती होगी तो उसकी पतली कमर लचकती हुई दिखाई देगी, जिसे देखकर तुम भी अवश्य ही कह दोगे कि विधाता की नारी-सृष्टि में उसके समान सुन्दर कोई दूसरी नहीं हो सकती। यथा-

तन्वी श्यामा शिखरिदशना पक्वबिम्बाधरोष्ठी,

मध्ये क्षामा चकितहरिणीप्रेक्षणा निम्ननाभिः।

श्रोणी भारादलसगमना स्तोकनम्रा स्तनाभ्यां,

या यत्र स्याद्युवतिविषये सृष्टिराद्येव धातुः।।[६]

विश्वामित्र और मेनका अप्सरा से उत्पन्न होने वाली कालिदास के नाटक की नायिका शकुन्तला एक असाधारण सुन्दरी थी। तभी तो उसे देखकर रूप-विस्मित दुष्यन्त ने कहा था-

मानुषीषु कथं वा स्यादस्य रूपस्य सम्भवं

न प्रभातरलं ज्योतिरुदेति वसुधातलात्।।[७]

नाटक के प्रथम एवं द्वितीय अंक के ये कुछ श्लोक शकुन्तला के सौन्दर्य चित्र के ही प्रमाण है कि कालिदास का सौन्दर्य अवबोध कितना उत्कृष्ट कोटि का था। यथा-

सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यं, मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति।

इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी, किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्।।[८]

अधर किसलयरागः कोमलविटपानुकारिणौ बाहू।

कुसुममिव लोभनीयं यौवनमङ्गेषु सन्नद्धम्।।[९]

अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनं कररुहैरनाविद्धं रत्नं मधु नवमनास्वादितरसम् ।
अखण्डं पुण्यानां फलमिव च तद्रूपमनघं, न जाने भोक्तारं कमिह समुपस्थास्यति विधिः।।[१०]

"इदं किलाव्याजमनोहरं वपुः, तपः क्षमं साधयितुं य इच्छति।
ध्रुवं स नीलोत्पलपत्रधारया, शमीलतां छेत्तुमृषिव्यवस्यति।।"[११]

इन सौन्दर्य उपमानों के माध्यम से कालिदास ने अपनी नायिका में इतना सौन्दर्य का आभास करा दिया कि वह साक्षात् सौन्दर्य का आकर प्रतीत होती थी। तभी तो राजा दुष्यन्त प्रथम बार में शकुन्तला को देखकर सहसा कह उठता है- **"अहो मधुरमासां दर्शनम्।"**[१२]

विदूषक के कथन में भी शकुन्तला के सौन्दर्य के विषय में वर्णन है कि विधाता ने पहले शकुन्तला को चित्ररूप में अंकित किया तदनन्तर उसमें प्राणसंचरण किया। अद्भुत लावण्य युक्त इस शकुन्तला का सौन्दर्य देख अभूतपूर्व स्त्रीरत्नसृष्टि के आभास को देख उसे आदर्श सुन्दरी के रूप में स्थापित किया गया है। यथा-

चित्रे निवेश्य परिकल्पितसत्वयोगा, रूपोच्चयेन मनसा विधिना कृतानु।
स्त्रीरत्नसृष्टिरपरा प्रतिभाति सा मे, धातुर्विभुत्वमनुचिन्त्य वपुश्च तस्याः।।[१३]

किसी भी सौन्दर्य को दर्शाने के लिए संसार के सभी कवियों ने उपमादि अलंकारों का सहारा लिया है। कालिदास तो उपमाओं के सिद्धहस्त हैं। पार्वती जी का वर्णन करते हुए लिखा है कि शिशुहाथी की सूण्ड व कदलीतरु आकृति में भले ही पार्वती जी की जँघासम प्रतीत हों किन्तु एक में खुरदरापन तो अन्य में शैत्य है, इसलिए ये सूण्ड व कदली तना पार्वती की जँघाओं की तुल्यता नहीं कर सकते। उसके लाल होठों पर छिटकी मीठी मुस्कान की धवलिमा ऐसी सुन्दर लगती है, जैसे लाल कोपलों में श्वेतपुष्प खिला हो या चमकदार मूंगों के मध्य मोती जड़ा हो-

नागेन्द्रहस्तास्त्वचि कर्कशत्वादेकान्तशैत्यात्कदली विशेषा।
लब्धापि लोके परिणाहि रूपं जातस्तदूर्वोरुपमानबाह्याः।।[१४]

अपि च -

पुष्पं प्रवालोपहितं यदि स्यान्मुक्ताफलं वा स्फुटविद्रुमस्थम्।
तनोऽनुकुर्याद्विशदस्य तस्यास्ताम्रौष्ठपर्यस्तरुचेः स्मितस्य।।[१५]

इसी प्रकार रघुवंश के छठे सर्ग में पूर्वजन्म की अप्सरा राजकुमारी इन्दुमती के स्वयंवर में इन्दुमती के सौन्दर्य का चित्रण करते हुए कालिदास ने कहा कि वह विधाता की

अद्‌वितीय रचना थी। "सैकड़ों नेत्रों ने उसे जब एकटक देखा और देखते ही केवल उनके शरीर ही अपने स्थानों पर पड़े रह गये, हृदय तो उस सुन्दरी के रूप की भूलभुलैया में खो गये" -

तस्मिन् विधानातिशये विधातुः कन्यामये नेत्रशतैकलक्ष्ये।

निपेतुरन्तःकरणैर्नरेन्द्रा देहैः स्थिताः केवलमासनेषु।।[१६]

यहाँ कवि ने विश्व के प्रत्येक सहृदय को पूर्ण छूट दे दी कि वह अपनी कल्पना की आदर्श सुन्दरी को किसी भी साँचे में ढाल ले। अतः कालिदास की इन्दुमती केवल भारतीय ही नहीं अपितु विश्व सुन्दरी थी। उनके ये सौन्दर्य-चित्र कभी पुराने नहीं पड़ सकते।

इस प्रकार कालिदास के सौन्दर्यचित्रों पर कवि माघकृत सौन्दर्य का लक्षण पूर्णतया चरितार्थ होता है, जिसमें कहा गया है कि सौन्दर्य वही है, जो प्रतिक्षण नया झलकता है। अतः कहा जा सकता है कि कालिदास के ये सौन्दर्यचित्र सार्वभौम व सदा नवीन रहने वाले हैं, वे किसी देश, काल या जाति तक सीमित नहीं हैं और आने वाला आधुनिक से आधुनिक युग भी उन्हें पुरातन करने में असमर्थ-सा प्रतीत होगा, क्योंकि मानवसमाज हमेशा से ही सौन्दर्य का पुजारी रहा है और आगे भी इसी साधना में रत रहेगा।

- + -

सन्दर्भसूची

१. बिहारी सतसई 432
२. नैषधचरितम् 22.252
३. शिशुपालवधम् 4.17
४. अभिज्ञानशाकुन्तलम् 6.14 गद्‌य
५. तत्रैव षष्ठांक गद्‌य
६. मेघदूतम् उत्तरमेघ 101
७. अभिज्ञानशाकुन्तलम् 1.24
८. तत्रैव 1.20
९. तत्रैव 1.21
१०. तत्रैव 2.10
११. तत्रैव 1.18
१२. तत्रैव प्रथमांक गद्‌य
१३. तत्रैव 2.9
१४. कुमारसम्भवम् 1.36
१५. तत्रैव 1.44
१६. रघुवंशम् 6.11